# राजा राम मोहन राय के समाज संबंधी सुधार

नाम – सपना रानी

## इतिहास

अगर विश्व के इतिहास पर दृष्टिकोण किया जाए तो हमें हर समय और हर स्थान पर संघर्ष ही संघर्ष दिखाई देता है, इस संघर्ष का कारण कहीं असमानता और शोषण, कहीं अत्याचार और अन्याय। भारतीय समाज भी अठारवीं–उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक बुराइयों जैसे जाति–प्रथा, लिंग भेद, छुआछूत, बाल–विवाह, पर्दाप्रथा, सती प्रथा, बहुतपत्नी प्रथा, विधवा प्रथा तथा दहेज प्रथा आदि प्रचलित थी जिसके कारण समाज का विभाजन देश का विकास तथा एकता की भावना दृढ न हो सकी जिसके परिणामस्वरूप भारतीय धर्म व संस्कृति पतन की तरफ जा रही थी। भारतीय जन जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले राजा राम मोहन राय ने भारतीय समाज में फैली अनेक स्त्री विरोधी कुप्रथाओं जाति प्रथा, अस्पृश्यता वर्ण व्यवस्था आदि को समाप्त करने तथा शैक्षणिक धर्म संबंधी कार्य कर समाज को सुधारने का बीड़ा उठाया।

## सती प्रथा के विरूद्व संघर्ष :–

सती प्रथा 19वीं में भारतीय समाज की सबसे भयंकर अमानवीय प्रथा थी। इस प्रथा के अनुसार पति की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को भी शव के साथ जिन्दा जलाया जाता है। यद्यपि इस प्रथा को अनेक विद्वानों, समाज सुधारकों तथा राजाओं ने बंद करने की प्रयास भी किए। 19वीं शताब्दी तक यह प्रथा ज्यों की त्यों

[1] ब्रह्मदत्त जोशी, सती प्रथा का यथार्थ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2000

[2] अहमद मनाजिर, लार्ड विलियम बैटिक, चुंग पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 1978

बनी रही और महिलाएं नरकीय जीवन जीती रही। राम पहले ही अपने परिवार में घटित सती प्रथा की घटना से मनोवज्ञानिक रूप से आहत थे। जब 1811 में राय के बड़े भाई जगमोहन की मृत्यु हो गई थी, उसकी पत्नी अलोक मंजरी को अपने पति के साथ सती होना पड़ा। राम ने अपनी भाभी को बहुत बचाने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हुए।

इस घटना को देखकर राय ने यह प्रतीज्ञा की वे भयंकर और निर्मम प्रथा को खत्म करके ही दम लेंगे। राममोहन राय ने सती प्रथा पर 1818 से 1832 तक सात ग्रंथ प्रकाशित किए। इसके अलावा 'बंगाली गजट' और अपनी पत्रिका 'संवाद कौमुदी' के द्वारा उन्होनें इस प्रथा का घोर विरोध किया। 1828 में लार्ड विलियम बैटिक भारत के गर्वनर जनरल बने तो राय ने उनसे सती प्रथा बंद करने की प्रार्थना की। लार्ड विलियम बैटिक ने उसकी प्रार्थना को 'कार्ट आफ डायरेक्टर्स' के सामने रखा तथा इस विषय पर जांच करवाई गई। 4 दिसम्बर 1829 को सरकार ने बंगाल प्रेसीडेंसी में सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया। इस कदम ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि चाहे सती स्वेच्छा से भी हो फिर भी उसे गैर–कानूनी माना जायेगा। उनके प्रयासों के कारण ही लार्ड विलियम बैटिक ने राय के प्रयत्नों द्वारा 1829 में एक आदेश जारी करके सती प्रथा को अवैध घोषित कर दिया। यहीं से हिन्दू समाज में सुधार में एक नवीन युग का सूत्रपात आरम्भ हुआ।

**<u>बहुपत्नी प्रथा :–</u>**

राय ने बहुपत्नी प्रथा के विरूद्व आवाज उठाई और एक कानून पास करने पर बल दिया जिसके अंतर्गत यह व्यवस्था की गई कि कोई भी हिन्दू एक मजिस्ट्रेट से एक लाईसेंस लिए बिना अपनी पत्नी के जीवन काल में दूसरा विवाह नहीं कर सकता।

' अजय श्रीवास्तव, राजा राम मोहन रय और सामाजिक परिवर्तन, गीता प्रकाशन, वाराणसी, 2002

समाज में स्त्रियों की दशा में सुधार के लिए राय ने विधवा विवाह का समर्थन किया कि समाज में पढ़ लिखे शिक्षित युवकों को अपनी आयु की विधवाओं के साथ पुनः विवाह के लिए प्रेरित किया। राय ने अपनी पत्रिका में 'संवाद कौमुदी' में कलकता के धनी हिन्दुओं से अपील कि दरिद्र विधवाओं की भलाई के लिए फण्ड स्थापित किए जाए ताकि उनका कल्याण हो सके। राय का स्वप्न था कि बाल विधवाएं पुनर्विवाह करें और प्रौढ़ विधवाएं सम्मान का जीवन व्यतीत करें।

**बाल विवाह रोक का समर्थन :–**

राय ने बाल विवाह की घोर निन्दा की थी। राय ने स्वयं भी बाल विवाह की बुराई का सामना करना पड़ा था क्योंकि उनकी बाल्यकाल में तीन बार विवाह हुआ था। वह लड़कों के लिए 25 वर्ष और लड़कियों के लिए 16 वर्ष की आयु का निर्धारण करते थे। 16 वर्ष से पहले लड़कियों में प्रजनन की क्षमता का पूर्ण विकास नहीं होता था।

**स्त्रियों के पैतृक संपत्ति के अधिकार का समर्थन :–**

राय ने पुरानी स्मृतियों एवं आधुनिक कानूनों का अध्ययन किया और जानकारी प्राप्त की। उन्होनें 1822 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'स्त्रियों के प्राचीन अधिकार' में लिखा है कि मृत्क पति द्वारा छोड़ गई सम्पत्ति में मां का बेटे के बराबर हिस्सा है और पुत्री का एक चौथाई हिस्सा होता है। उनके अनुसार विष्णु पुराण में

---

[1] शिव कुमार गुप्त, ए स्टडी आफ वूमन आफ बंगाल, बन्ना पब्लिकेशन, कलकता, 1999

[2] शंकर सेन गुप्त, आधुनिक भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन

भी स्त्री को पति की संपत्ति का हिस्सा न देने के कारण लालची रिश्तेदार ने विधवा को सती होने पर जोर देते है। इसी कारण राय ने स्त्री के सम्पत्ति के अधिकारों पर बल दिया।

**जाति–प्रथा, छुआछूत एवं अन्य सामाजिक समस्याओं संबंधी सुधार :–**

प्रारम्भ में हिन्दू समाज में चार वर्ण थे – ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। ऋग्वेद के प्रमुख शुक्त में वर्णय व्यवस्था का वर्णन मिलता है जोकि जाति व्यवस्था का कारण बनी। 'गीता' में कहा गया है कि योग्यता और कर्म के आधार पर विभिन्न वर्गों का निर्माण हुआ है।

सामाज शास्त्रियों के अनुसार वर्ण का अर्थ 'रंग' से लिया जाता है। पुराणों में ब्राहमणों को 'सफेद वर्ण' का क्षत्रियों को 'लाल वर्ण' का वश्यों को 'पीले वर्ण' का, शूद्रों को 'काले वर्ण' का बताया गया है।

वर्ण व्यवस्था के कारण जब भारतीय समाज में धीरे–धीरे जाति–पाति एवं अस्पृश्यता को बढ़ावा मिला, इसी कारण उच्च जाति के लोग, निम्न जाति के साथ अमानवीय व्यवहार करते थे। 19वीं शताब्दी में बंगाल में दो जातियां प्रमुख थी – ब्राहमण और शूद्र। आगे चलकर ये जातियां उपजातियों में बंट गई। ऐसे में राय ने जाति व्यवस्था के बुरे परिणामों से हमेशा चिन्तित और सजग रहे। राजा राम मोहन राय ने कहा ''आत्मा बिनाजाति की होती है''। इसी कारण जन्म के आधार पर जाति भेद अनुचित है।

राय ने 1821 में 'ब्राहनिकल मैगजीन' में लिखा कि –

---

[1] आर सगीत राव, कास्ट सिस्टम इन इंडिया : मिथ एण्ड रियल्टी, इंडिया पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1990

[2] सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बौद्विक साहित्य में वर्ण व्यवस्था, मीता प्रकाशन, वाराणसी, 1987

''जाति–पात और धर्म के भेदभाव को छोड़ सभी मानव हृदयों को
प्यार से जीतना ही एकमात्र पूजा है।''

राय के प्रयत्नों से 1833 में एक एक्ट में धारा जोड़ी गई कि भविष्य में किसी भी भारतीय को धर्म, वंश, जाति स्थान, रंगभेद के आधार पर नौकरी से वंचित नहीं किया जायेगा। उन्होनें ब्रह्म समाज को सम्पूर्ण समाज के लिए एक सामुदायिक धर्म सभा का स्वरूप दिया जहां पर हर जाति धर्म के लोग इकट्ठे होते हैं।

**धार्मिक सुधार :–**

धार्मिक अन्धविश्वासों के विरूद्व उनकी चेतना बचपन से ही जाग गई थी। एक लेखक ने ठीक ही लिखा है –

''मात्र आठ साल की उम्र में उनका मूर्ति पूरा से मोह भंग हो गया था,
और इसके विरूद्व उन्होनें अपने पिता से भी विवाद किया था।''

यही कारण था कि राय ने घर को भी छोड़ना पड़ा और घर छोड़ने के बाद मूर्ति पूजा का विरोध करके ज्ञान पाने का निश्चय किया। उन्होनें कहा कि मूर्ति पूजा केवल ऐसे लोगों के लिए जो 'मस्तिष्क' को विकसित करने में असमर्थ है और जिनमें पर्याप्त 'ज्ञान का अभाव' है।

---

[1] बलबीर आचार्य, ऋग्वेदिय ब्राहमणों का सांस्कृतिक अध्ययन, विद्या निधि प्रकाशन दिल्ली, 1991

[2] एन.के.दत्त, ओरिजन एण्ड ग्रोथ आफ कास्ट इन इंडिया, अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कलकता, 1987

1820 में राय ने 'प्रीसेप्ट जीसस' नामक ग्रंथ प्रकाशित किया। धार्मिक विचारों का प्रचार करने के लिए चार तरीके अपनाएं – किताबों एवं पत्रिकाओं द्वारा, बातचीत एवं बहस द्वारा, धार्मिक संघों की स्थापना, स्कूलों के द्वारा ज्ञान को फैलाना। राय ने 1815 में 'आत्मीय सभा' की स्थापना की जिसका उद्देश्य 'अदृश्य ब्रह्म' कहा गया है। यह मानव का जन्मजात अधिकार है कि वह परम्पराओं से हटकर चले,

विशेषकर यदि परम्पराएं सीधे अनैतिकता के ओर ले जाती है। उन्होनें स्त्रियों को भी धार्मिक शिक्षा लेने पर बल दिया और स्त्रियों को 'गायत्री मंत्र' द्वारा पारिवारिक अराधना करने के लिए प्रेरित किया। राय ने कभी भी किसी धर्म विशेष की निन्दा नहीं कि अगर निन्दा की तो केवल आडम्बरों की जो मानव को आत्म विनाश की ओर ले जा रहे थे।

जब राय से उसकी छोटी पत्नी ने उनसे पूछा कि ''कौ सा धर्म अच्छा है''? उनके प्रश्न का उत्तर था ''जैसे गाय विभिन्न रंगों की होती है, परन्तु उनके दूध का रंग एक समान होता है।'' उसी प्रकार विभिन्न धर्मों की विभिन्न विचारधाराएं एवं शिक्षाएं है परन्तु हर धर्म का सार सच्चे रास्ते को दिखलाना है।

**शैक्षणिक सुधार :–**

राय के जन्म के समय देश में शिक्षा व्यवस्था की स्थिति भी आलोचय थी। शिक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य मनुष्य की 'आध्यात्मिक उन्नति' करना था। इसलिए उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि यदि भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर होना है तो मध्यकालीन शिक्ष पद्धति को त्याग कर 'आधुनिक शिक्षा' को अपनाना होगा।

---

शिवनाथ शास्त्री, लीडर्स आफ द ब्रह्मो समाज, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000

मन्जु कन्हल, उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक परिवर्तन पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1998

1781 में हेस्टिग्स ने कलकत्ता में 'मदरसे' की स्थापना की, इस मदरसे का लक्ष्य मुस्लमानों को शिक्षित करना और उन्हें अंग्रेजी शिक्षा के प्रति निष्ठावान बनाना था। राय ने रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा के अध्ययन पर बल दिया अंग्रेजी शिक्षा से ही वैज्ञानिक, साहित्यिक, नैतिक, तार्किक तथा उदारवादी चिन्तन का विकास होगा। 1825 में उन्होनें स्वयं 'वेदान्त कालेज' की स्थापना की, इसका उद्देश्य इसाई द्वारा हिन्दू धर्म की आलोचना को रोकना था।

1816 में राय ने 'हिन्दू कालेज' की स्थापना की। किन्तु इस कालेज की स्थापना से पूर्व ही रूढ़िवादियों ने कालेज हेतु किसी प्रकार का चंदा देने से मना कर दिया। 1832 में 'एग्लो हिन्दू स्कूल' की स्थापना की। इस स्कूल में खागोल, विज्ञज्ञन वाल्टेयर, यक्लिड और यंत्र शिल्प की शिक्षा दी जाती थी।

1818 में उन्होनें एक पत्रिका में लिखा कि स्त्रियों को यदि शिक्षा सें वंचित रखोगे तो हम न्याय की घोषणा नीं कर सकते। राय ने अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में वह मजबूत भारतीय समर्थन जुटाया जिसके आधार पर 1835 में लार्ड मैकाले अंग्रेजी शिक्षा की पैरवी कर सके। 1833 में राय की मृत्यु हो गई। इसके दो वर्ष बाद ही भारत में 1835 में पाश्चात्य शिक्षा लागू हो गई। इसके पीछे राम मोहन राय के प्रयत्नों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1882 में लार्ड रिपन के समय में नियुक्त शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में भी राय के कार्यों को सराहा गया और उनके प्रयत्नों से जो उन्होनें अंग्रेजी शिक्षा को लागू कराने के लिए किए थे, की प्रशंसा की। साइमन कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि लोग भ्रमवश अंग्रेजी शिक्षा के लिए मैकाले के प्रयासों की सराहना करते है लेकिन वास्तविकता में राय जैसे सुधारकों का योगदान रहा है।

' बी.डी.बसु, हिस्टी आफ एजुकेशन इन इंडिया अंडर द रूल आफ द ईस्ट कम्पनी, प्रकाशन दिल्ली, 1935

' आर.एन. टैगोर, राजा राम मोहन राय : द मैन एण्ड हिज वर्क, सेन्चुरी पब्लिकेशन, कलकता, 1914

राजा राम मोहन राय को यह मालूम पड़ा तो उन्होनें कहा –

''बाईबल पढ़ने से लोग ईसाई नहीं बन जाते
मैनें स्वयं कुरान पढ़ी है, फिर भी मुसलमान नहीं बना।
कैसे स्वयं पूरी बाईबल का अध्ययन किया है फिर भी तुम्हें
मालूम है कि मैं ईसाई नहीं हूँ। बाईबल पढ़ने से डरो मत, उसे समझो।''

वस्तुतः राजा राम मोहन राय एक आधुनिक व्यक्ति थे, इसलिए उन्होनें निर्भीकता से आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया। उनकी स्पष्ट राय थी कि आधुनिक शिक्षा की देश और समाज में परिवर्तन लाने का प्रमुख माध्यम बनेगी। राय ने कहा था कि 'आधुनिक शिक्षा ही वक्त की सबसे बड़ी आवश्यकता है और इस शिक्षा का सूत्रपात समाज के सबसे निचले वर्ग से करना चाहिए'।

क्योंकि कड़ाही जब तक नीचे से गर्म न हो तब तक खाना नहीं पक सकता। राय के इन्हीं मानवता के प्रति कार्यों के लिए हमेशा याद किये जाते रहेंगे।

---

' पूनम उपाध्याय, सोशल, पोलटिक्ल, इकानामिक एण्ड एजुकेशन आइडियाज आफ राजा राम मोहन राय, टैगोर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1944

**निष्कर्ष :–**

अंत में कहा जा सकता है कि राय द्वारा जो समाज सुधारों से संबंधित जो विचार दिए गए हैं उनकी आज के संदर्भ में भी प्रासंगिकता है क्योंकि आज भी 21वीं सदी का भारतीय समाज इन समस्याओं से झूझ रहा है। आवश्यकता इस बात कि है कि भारतीय जनता को विशेषकर स्त्रियों को शिक्षित तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करवाकर ही इन समस्याओं से कुछ हद तक निपटा जा सकता है। यदि इसके कुछ सकारात्मक परिणाम निकलते है तो भारतीय समाज में यह एक बुनियादी परिवर्तन का कारण रहेगा। यद्यपि वर्तमान युग 21वीं सदी का युग है, यह 19वीं और 20वीं सदी से अलग सोच, परिस्थितियों एवं विकसित स्वरूप का है और भारत विश्व की महान शक्ति बनने की ओर अग्रसर है।

(सपना रानी)
मकान नं0 193, सैक्टर–14
पार्ट–2, करनाल (हरियाणा)